Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. X, Issue No. XIX, July-2015, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

''राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को बनाए रखना प्रत्येक नागरिक का परम कर्तव्य''

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. X, Issue No. XIX,July-2015, ISSN 2230-7540

''राष्ट्रीय एकता व अखण्डता को बनाए रखना प्रत्येक नागरिक का परम कर्तव्य''

Mrs. Navneet Singh[1] Mis. Durga Ratoriya[2]

[1]Lecturer, Devi Rukmani Shikshan Shansthan, Khargon (MP)

[2]Lecturer, Devi Rukmani Shikshan Shansthan, Khargon (MP)

Abstract – *आज राष्ट्रीय एकता का गंभीर प्रश्न यह हैं, कि हमारी धरती पर विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग और विभिन्न सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं। जहां मतभेद व घृणित भावना जन्म लेती हैं। जिसका प्रमुख कारण 'साम्प्रदायिकता' हैं। आज आन्तरिक व बाहृय दोनों रूपों में राष्ट्रीय एकता परम आवश्यक हैं, क्योंकि यदि हम ही हमारे देश को तोड़ने का प्रयास करेंगे, तो बाहरी शक्ति इसका लाभ उठा लेगी। आज भाषावाद भी राष्ट्रीय एकता की एक समस्या बन गयी हैं। राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिये फलस्वरूप सामूहिक निर्णय लेना परम आवश्यक हैं।*

---------------------------------x---------------------------------

राष्ट्रीय एकता से तात्पर्य –

राष्ट्रीय एकता से अभिप्राय सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक एकता को बनाए रखने से हैं। क्योंकि यहां हर धर्म, जाति और सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं, तो सबके हितों को समझना आवश्यक हैं।

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता –

आज देश की आन्तरिक व बाहरी सुरक्षा के लिये राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता हैं, क्योंकि यदि हमने हमारे देश को तोड़ने का प्रयास किया तो बाहरी शक्तियां इसका लाभ उठा लेगी। हमारे देश की उन्नति दूसरे देशों को फुटी आंख नहीं भाति हैं। इसलिए हमें सावधानीपूर्वक उन सब बातों को पता लगाना पड़ेगा जो एकता के मार्ग में बाधा पहुंचा रहे हैं।

देश की वर्तमान स्थिति –

आज देश के अनेक धर्म और जाति के लोग अपने–अपने धर्म विशेष के लिए संघर्ष कर रहे हैं। दंगे, लड़ाई, झगड़ा जिससे वातावरण घृणित भावना से भर गया हैं। लोगो के मन में भी साम्प्रदायिकता की भावना घर कर गई हैं, जो सारे वातावरण को विषैला कर रही हैं।

राष्ट्रीय एकता को खण्डित करने वाले कारक –

राष्ट्रीय एकता को बाधा पहुंचाने वाली वो सारी बाहरी शक्तियां सक्रिय रूप से कार्य कर राष्ट्रीय एकता के मार्ग में रोड़ा बन रही हैं। साम्प्रदायिकता इसका सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। जो राष्ट्रीय एकता को खण्डित करने में विषैला बीज बो रहा हैं। ''भाषावाद'' भी राष्ट्रीय एकता को खण्डित करने में एक समस्या हैं। क्योंकि यहां पर हर प्रान्त के लोगों की बोली–भाषा में भी अन्तर पाया जाता हैं और धर्म के नाम पर साम्प्रदायिकता फैलाना आदि भी राष्ट्रीय एकता को खण्डित करने में अपना योगदान दे रहे हैं।

निष्कर्ष –

राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के फलस्वरूप सामूहिक निर्णय लेना परम आवश्यक हैं। सभी देशप्रेमी, समाजसेवी, युवाव्यक्ति, पत्रकार, लेखक, कवि और घरेलू महिलाएं आदि को निर्णय सामूहिक रूप से लेना जरूरी हैं, क्योंकि राष्ट्रीय एकता को बनाए रखना इनका परम कर्तव्य हैं। बच्चों में भी विश्वबंधुत्व की भावना का विकास करने का प्रयास करना ताकि वे भावी नागरिक बन देश में योगदान दे सकें। जिससे राष्ट्रीय एकता के स्वर गुंजायमान होंगे तथा सुख–शांति आदि अनुभव कर सकेंगे।

कुंजीशब्द –

राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, साम्प्रदायिकता, भाषावाद, विश्वबंधुत्व।

संदर्भ –

दुबे, आर. भारद्वाज, बी. (2010), ''समाजशास्त्री का परिचय एवं भारत में समाज'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, (1–300)।

भार्गव, एस., शर्मा, आर. (2015), ''समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा'', राखी प्रकाशन, आगरा, च्च (283–295)।